❑कविता

लिछमी

रेवतदान चारण

कवि परिचै

राजस्थानी कविता सूं जन-जागरण रा भाव विकसित करण वाळा आधुनिक रचनाकारां मांय कवि रेवतदान चारण री खास भूमिका है। कवि रौ जलम जोधपुर जिलै रै मथाणिया गांव में सन् 1924 नै होयौ। परम्परागत चारण-सैली री जूनी-डिंगळ कविता री जागां कवि रेवतदान, जनचेतना रै काव्य री सिरजणा करी। 'चेत मानखा', 'धरती रा गीत' अर 'उछाळौ' कवि री चरचित काव्य-पोथ्यां है। आप केंद्रीय साहित्य अकादेमी सूं पुरस्कृत रेवतदान आपरी कवितावां अर गीतां रै पाण सोसण, अत्याचार अर अन्याव रै खिलाफ जन-जागरण रा भावां नैं जगावण रौ सरावण जोग प्रयास करयौ। 'इंकलाब री आंधी', 'लिछमी' अर 'माटी थनैं बोलणौ पड़सी' कवितावां इण दीठ सूं आपरी खास ओळखाण करावण वाळी कवितावां है। भाव, भासा अर कथ्य असरदार अर हिरदै में जोस अर उछाह रा भाव भरण री सामरथ राखै। आप राजस्थानी भासा री मान्यता सारू ई समरपित हा, पण मान्यता री आ टीस मन में ई रैयगी। 17 जून, 1997 नै जोधपुर में आपरौ सुरगवास होयग्यौ।

पाठ परिचै

रेवतदान चारण सोसण मुगत समाज री थापना रा हिमायती हा। करसा अर मजदूरां रै दुख-दरद सूं जुड़नै समाज सापेक्ष सामाजिक क्रांति री बात करी। आपरी रचना 'लिछमी' मांय काळ सूं बाथेड़ौ करता करसा अर मजूर करड़ी मैणत रै उपरांत लिछमी रै नीं तूठण री व्यथा कथीजी है। कवि लिखै कै जिकौ करसौ मैणत करनै अबखायां रौ सामनौ कर लिछमी नैं पाळी-पोसी वा इतरी गुणचोर है कै धनवानां रै घरै जाय बैठी। कवि कैवै कै हे लिछमी! इण तरै कळपता प्राणां नैं अधमरया छोडनै मत जा अर जे जावणौ इज है तौ आं अधमरिया प्राणां नैं खतम करनै जा। जे विधाता रै चितेरा हाथां सूं थारौ सिरजण होयौ है तौ मजूर आपरी मैणत सूं थारौ सिणगार करयौ है। आपरै रगत सूं थारै मैंदी लगाई है। आपरै घर-घर री जोत बुझायनै फगत थारी जोत करी है। पण हे लिछमी, दिवाळी रै दिन मजूरां रै अैसानां रौ मोल चुकायां बिना ई वांरी सगळी आसावां माथै पाणी फेर थूं धनवानां री हवेल्यां जा चढी। थूं हरमेस भला अर भोळा लोगां नैं ठगती आयी है। 'धान खावै मांटी रौ, गीत गावै बींरै रा' पण अबै थनै अै गीत नीं गावण देवांला। जे थूं नीं मानी अर जावण रौ कैयौ तौ थारी जीभ डांम देवांला, आंख फोड़ देवांला। सेठां रै घरै जावण री तेवड़ैला तौ थारा हाथ हथकड़्यां सूं अर पग बेड़्यां सूं जकड़ देवांला, अठै तांई कै थनैं पांगळी भी कर सकां हां। हे लिछमी! दीपमाळा रै लारै थारी हिरदै री काळख साफ निगै आवै। हे लिछमी! थारी चूंदड़ी रा झपेटा सूं इण भोळा ढाळा करसै री आसावां रूपी दीवट नैं बुझायनै मत जा।

लिछमी

ओढ्यां जा चीर गरीबां रा, धनिकां रौ हियौ रिझाती जा
चुंदड़ी रौ अेक झपेटौ दै, अै लिछमी दीप बुझाती जा!

हळ बीज्यौ सींच्यौ लोही सूं, तिल-तिल करसौ छीज्यौ हौ
ऊंनै बळबळतै तावड़ियै, कळकळतौ ऊभौ सीझ्यौ हौ
कुण जांणै कितरा दुख झेल्या, मर खपनै कीनी रखवाळी
कांटां-भुट्टां में दिन काढ्यां, फूलां ज्यूं लिछमी नै पाळी
पण बण-ठण चढगी गढ-कोटां, नखराळी छिण में छोड साथ
जद पूछ्यौ कारण जावण रौ, हंस मारी बैरण अेक लात
अधमरिया प्रांण मती तड़फा, सूळी पर सेज चढाती जा
चुंदड़ी रौ अेक झपेटौ दै, अै लिछमी दीप बुझाती जा!

जे घड़ी विधाता रूपाळी, सिणगार दियौ है मजदूरां
रखड़ी बाजूबंद तीमणियौ, गळहार दियौ है मजदूरां
लोही में बोटी बांट-बांट, जिण मेंहदी हाथ लगाई ही
फूलां ज्यूं कंवळा टाबरिया, चरणां में भेंट चढाई ही
घर री बू-बेठ्यां बिलखी, पण लिछमी थनै सजाई ही
इक थारी जोत जगावण नै, घर-घर री जोत बुझाई ही
पण अैन दिवाळी रै दिन बैरण, सांम्ही छाती पग धरती
ठुमकै सूं चढी हवेली में, मन मरजी रा मटका करती
जे लाज बेचणी तेवड़ली, तौ पूरौ मोल चुकाती जा
चुंदड़ी रौ अेक झपेटौ दै, अै लिछमी दीप बुझाती जा!

इतरा दिन ठगती रैई है, थूं भोळी बण छळ जाती ही
खाती ही रोटी मांटी री, पण गीत वींरै रा गाती ही
जे हमें जाण रौ नाम लियौ, तौ जीभ डांम दी जावैला
जे निजर उठी महलां कांनी, तौ आंख फोड़ दी जावैला
जे हाथ उठायौ हाकै नै, नागौरी गहणौ जड़ दांला
जे पग धर दीनां सेठां घर, तौ पगां पांगळी कर दांला
महलां गढ-कोटां-बंगळां रा, वै सपना हमें भुलाती जा
चुंदड़ी रौ अेक झपेटौ दै, अै लिछमी दीप बुझाती जा!

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

चीर=ओढणी, चूनड़ी। हियौ=मन। रिझाती=राजी करती। झपेटौ=फटकारौ। बीज्यौ=बोयौ, तोप्यौ। लोही=रगत, खून। छीज्यौ=दुख पायौ। गढ-कोटां=म्हैल-माळियां। तड़फा=तकलीफ देवणौ। रूपाळी=फूठरी, सुंदर। कंवळा=कोमल। बिलखी=अभावग्रस्त। तेवड़ली=धारली, निस्चै कर लियौ। छळ=धोखौ। मांटी=घरधणी, मोट्यार। डांम=सळाख नैं गरम करनै सरीर रै चेपणी, डील नैं दागणौ। हाकौ=जोर सूं दकालणौ। पांगळी=दिव्यांग, पगां सूं लाचार।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. रेवतदान चारण किण काव्यधारा रा कवि है ?
   (अ) छायावादी (ब) कलावादी
   (स) राष्टवादी (द) प्रगतिवादी
   ( )

2. रेवतदान चारण रौ जलम कठै होयौ ?
   (अ) मथाणिया (जोधपुर) (ब) देशनोक (बीकानेर)
   (स) कोठारिया (उदयपुर) (द) हरमाड़ा (जयपुर)
   ( )

3. कवि रै मुजब लिछमी किणरौ हियौ रीझावै ?
   (अ) किसानां रौ (ब) मजूरां रौ
   (स) धनिकां रौ (द) राजावां रौ
   ( )

4. 'चुंदड़ी रौ अेक झपेटौ दै', अठै झपेटौ सूं कांई अरथ है ?
   (अ) झटकौ (ब) फटकारौ
   (स) लटकौ (द) लैरकौ
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. मर-खप नै लिछमी री रुखाळी कुण करै ?
2. लिछमी नैं कुण सिणगारै ?
3. लिछमी नैं पांगळी करण री बात कवि उणरै कठै जावण रै कारण करै ?
4. रेवतदान चारण री एक कविता पोथी रौ नांव बतावौ।

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि रेवतदान चारण रौ संखेप में परिचै लिखौ।
2. रेवतदान चारण आपरी कवितावां रै पाण किणरै खिलाफ जन-जागरण रा भावां नैं जगावण रौ प्रयास करयौ ?
3. 'लिछमी' कविता में कवि री कांई अरदास है ?
4. लिछमी कविता री कोई दो ओळ्यां लिखौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''लिछमी कविता प्रगतिसील काव्यधारा री सांवठी रचना है।'' इण कथन रौ खुलासौ करौ।
2. रेवतदान चारण री 'लिछमी' कविता रै भावां रौ फूठरापौ दाखला देयनै उजागर करौ।
3. 'लिछमी' कविता रै पाण कवि कांई कैवणौ चावै ? आपरै सबदां में समझावौ।
4. 'लिछमी' कविता री सिल्पगत विसेसतावां दाखला देयनै उजागर करौ।

नीचै दिरीज्या काव्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. कुण जांणै कितरा दुख झेल्या, मर खपनै कीनी रखवाळी
   कांटां-भुट्टां में दिन काढ्यां, फूलां ज्यूं लिछमी नै पाळी
   पण बण-ठण चढगी गढ-कोटां, नखराळी छिण में छोड साथ
   जद पूछ्यौ कारण जावण रौ, हंस मारी बैरण अेक लात

2. जे घड़ी विधाता रूपाळी, सिणगार दियौ है मजदूरां
   रखड़ी बाजूबंद तीमणियौ, गळहार दियौ है मजदूरां
   लोही में बोटी बांट-बांट, जिण मेंहदी हाथ लगाई ही
   फूलां ज्यूं कंवळा टाबरिया, चरणां में भेंट चढाई ही

3. इतरा दिन ठगती रैई है, थूं भोळी बण छळ जाती ही
   खाती ही रोटी मांटी री, पण गीत वींरै रा गाती ही
   जे हमें जाण रौ नाम लियौ, तौ जीभ डांम दी जावैला
   जे निजर उठी महलां कांनी, तौ आंख फोड़ दी जावैला